ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 125-128
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

1. जूही कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. सतीश कुमार राय
प्रोफ़ेसर एवं मानविकी संकायाध्यक्ष,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :

जूही कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

रेवतीरमण का कवि कर्म

रेवतीरमण हिन्दी के प्रतिनिधि आलोचक के रुप में मान्य हैं। समकालीन हिन्दी आलोचना को अधिक पाठउन्मुक्त और संवादपरक बनाने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। रेवतीजी की आलोचना को अधिक सम्प्रेष्य और सर्जनात्मक बनाने में उनके कवि कर्म का सार्थक योगदान रहा है। वे एक समर्थ कवि हैं किन्तु उनकी सबल आलोचना पक्ष के कारण उनका कवि कर्म प्रायः ओझल रहा है।

रेवतीजी ने अपने साहित्यक जीवन की शुरुआत कविता लेखन से की। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी काव्य यात्रा प्रारंभ हो चुकी थी। साहित्य के गंभीर अध्येता होने के कारण उन्होंने हिन्दी कविता की परंपरा को परखा था इससे उनका काव्य विवेक गहरा हुआ। वे अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति थे। इसलिए कविता के बीज उनके भीतर मौजूद थे। 2001 में उनकी 47 कविताओं का संग्रह 'समय के रंगत' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह का ब्लर्व लिखते हुए ध्रुवनारायण गुप्त ने टिप्पणी की- यह एक अच्छी खबर है कि पिछले दो दशकों से लगातार अपनी आलोचनात्मक गद्य से सार्थक हस्तक्षेप करने के अतिरिक्त रेवतीरमण कविताएँ भी लिखते रहे हैं। ऐसी कविताएँ जिसमें वे अपने साथ हैं, अपने अंतर्विरोधों और सृजनात्मक विकलता के साथ। अपने अंतरंग और इतिहास बनते समय गले मिलते कई बार उससे मुठभेड़ की मुद्रा में। इन कविताओं में यथार्थ है और स्वप्न भी। भाषा द्वन्द्वात्मक अनुभूतियों की एक आकर्षक मुद्रा है। संघर्ष श्रान्त किन्तु कई बार बदलाव की परिस्थिति और संभावना से अनुगूँज उगाहते हुए।

'समय की रंगत' की कविताएँ कवि का 'आत्मनीड़' हैं, उनमें वाचालता नहीं, भीतर की खामोशी का मन्थर गति संवाद ही प्राथमिक है। लेकिन कुल मिलाकर ये उसके गद्य के इर्द-गिर्द या बावजूद नहीं-

इनकी अपनी रंगत है, संरचना में स्वाधीन और एक हद तक निर्विकल्प भी। इन्हें लिखे बिना साँस लेना मुश्किल था।"[1]

यह संग्रह हिन्दी के मूर्धन्य कवियों 'भगवत रावत', 'ज्ञानेन्द्रपति' के साथ हिन्दी, भोजपुरी के साहित्यिक योद्धा 'अरुणेश नीरन' को समर्पित है। यह समर्पण ही कविता की मूलभाव भूमि को व्यंजित करता है ये तीनों रचनाकार अपने समकाल को उसके समस्त यथार्थ को अपने रचनाओं में चित्रित करते रहे हैं। संग्रह की पहली कविता में ही आशंका का स्वर है और अपने समय से सीधा संवाद भी-

"अभी तो सुनी जा सकती है
समय संध्या की कातर काँपती धड़कनें
धीमी गति के समाचार की तरह
जीवित हैं कुछ पुरानी मूल्यवान प्रतिध्वनियाँ
उदास आत्मा की सलवटों में
अमरता के कई-कई अवशेष।"

इस कविता में वे आज के समय में पनप रहे व्यक्तिवाद का आतंकवाद युद्ध लिप्सा पर चितिंत होते हुए लिखते हैं-

"अभी तो आने हैं
भूकंप के कई बड़े झटके
गिरेंगी गगनचुम्बी इमारतें
तो दब जायेंगी दुर्लभ दंतकथाएँ
दुरभिसंधियों के मलबे के नीचे
रौदेंगे अश्वमेघ के घोड़े
आस्था की दिगंतजयिनी पताकाएँ
कूटनीति के जमूरे
कवियों के महान सुन्दर सपने
कन्दुक समान नरमुण्ड
उछालेंगे पिशाच
पियानो बजायेंगे विश्व मंच पर
खोपड़ियों में भरकर उष्ण रक्त
पीयेंगे तानाशाहों के प्रेत
यशस्विनी डाकिनियों के नाम।"[2]

और-

"जब होगा
अंतिम जवनिका-पतन
तो जोर-जोर से बाँचे जायेंगे साम्य-सद्भाव के लिए
लम्बे अपशकुन के आलेख
सुनकर बधिर हो जायेंगे वसुन्धरा के बेटे
अर्थहीन नहीं है नीरव
मंगलाचरण और भरत वाक्य का निषेध
संकेत है नटी की चीख
कि यातना चलेगी अन्तहीन।"[3]

21 वीं शताब्दी के जन-जीवन और आसन्य संकटों के प्रति कवि आसंचित है। कवि का कथन है-

"सपने आने लगे हैं अभी से
जागती हुई आँखों में
ताबरतोड़ कब्रिस्तान के सपने
चेहरों पर पसर चुकी है
ऊब, उदासी और थकान
वनस्पतियाँ छिपाने लगी हैं
छाया आत्मा के भीतर
आप भी जरा सोचिए
इक्कीसवीं शताब्दी की थरथराती उँगलियाँ
एक दिन जब दबायेंगी युद्ध के बटन
तो क्या
रसातल में नहीं चली जाएगी
इक्कीसवीं शताब्दी?"[4]

'कई बार कर्कश समय', 'खाली दिमाग' शीर्षक कविताओं में युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। इस संग्रह की एक महत्त्वपूर्ण कविता है 'कागज'। कागज के महत्व को कवि ने इन पंक्तियों में रेखांकित किया है-

"कागज धरती को धारण करते हैं

उजली हँसी में छिपाए
ब्रह्माण्ड की वेदना
खुला आकाश निश्छल निराकार
कोरे कागज दुग्ध धवल पंख है हंसों के
बड़ा से बड़ा दंभ
कन्दुक-सा लुढ़कता नजर आता है
भीम की गदा से भी भारी
सव्यसाची के वाण से भी अचूक
कागज की आँच में झुलसकर
राख बन जाता है
आततायी का आतंक।"[5]

कविता के अंत में कागज की महिमा को रेखांकित करते हुए कवि ने कहा है-

"समझौते की सकल तनी हुई भृकुटियाँ
पसर जाती हैं कागज पर
स्निग्ध विकल रंगों में
कागज की नाव बने तैर रहे हैं शिशु-सपने
प्रेम की पाती प्रसन्नता है कागज की
जो अक्सर धुल जाती हैं आँसुओं से
प्रेम की पाती प्रसन्नता है कागज की
कागज से बड़ा अबतक नहीं बन पाया
दुनिया में कोई रेल-मार्ग
कोई पुल, कोई प्लेटफार्म।"[6]

कागज के साथ कलम पर भी ये पंक्तियाँ कितनी सटीक है-

"एक दिन जब काम नहीं आयेंगे ए0 के0 सैंतालीस
और होंगे रॉकेट लांचर बीमार परेशानहाल
तब भी कलम चलाती रहेगी अपने हाथ-पाँव
बेधड़क उतर जाएगी वेगवती नींद की नदी में
स्वप्न के थपेड़ों से सहलाती
इच्छाओं के तुरंग पर सवार
कलम है तो कायम रहेगी यह दुनिया
कयामत के दिन भी।"[7]

इसी तरह किताब पर उनकी पंक्तियाँ हैं-

"दीवारें भीतर की हों
या बाहर की
दिमागों को बंद होने से
बचा लेती है किताब
एक विशाल प्रपंच-सा पसरा हुआ
शिष्टाचार का साम्राज्य
कुछ नहीं, मुट्ठी भर धूल है सभ्यता की
किताब के पन्नों में
इन्तजार में जाग रहे सपने हैं
हाँफ रही क्रूरता बेदम।"[8]

कवि आज के बाजारवाद के छल-छद्म से आमजन को खबरदार करता है बाजारवाद के विकास में सबसे मुख्य भूमिका विज्ञापन की होती है। विज्ञापन पर कवि की टिप्पणी है-

"मुक्तबाजार है विश्व ग्राम
इसमें सफलता नाम है विज्ञापन का
विफल जो हैं
जान लें हाशिये का रहस्य
और हो सके तो पछतायें नहीं
कि अब तक क्यों नहीं किया
आत्मा का विज्ञापन।"[9]

इस संग्रह की एक महत्त्वपूर्ण कविता है 'कस्बे का कवि' इस कविता में कवि कर्म की प्रासंगिकता पे विमर्श है और गुमनाम कलमकार की सार्थक भूमिका पर प्रकाश भी। कवि की मान्यता है कि कस्बे के रचनाकार के दृष्टि अधिक व्यापक और दूरदर्शी है-

"कस्बे का कवि देख पाता है
संजय की आँख से
गर्दीगुबार के पार
पटना, लखनऊ, भोपाल, इन्द्रप्रस्थ
यानी कविता के भूगोल में

उपभोग और अपसंस्कृति के
साम्राज्यवादी उपनिवेश
जिसका न अपना आकाश है
न अपनी धरती
कस्बे का कवि समझ नहीं पाता
कि कहाँ से आती है वह कलाबाजी
जो बना देती है
उसकी भाषा को
चमगादड़ों का रक्षा-कवच।"[10]

इस संग्रह में 'नीम', 'दीवारे', 'किराये का घर', 'दंगा', 'खेल', 'पतंग और बच्चा', 'जनता का कवि', 'बसंत', 'पुष्पगंधा' 'सिंहलद्वीप' जैसी कविताएँ हैं। जायसी, रेवतीजी के प्रिय कवि हैं और उनके सिंहल द्वीप को लेकर वे निरंतर सोचते और कल्पना करते रहे हैं। जायसी प्रेम की समग्रता के कवि हैं उनके सिंहल द्वीप के संबंध में कवि का कथन है-

"अमर प्रेम के प्यासे कवि की
कोरी कल्पना नहीं है सिंहलद्वीप
अपने ही अनुभवों की किताब में
पढ़े जिनमें ढाई आखर
पता है उन्हें
वहाँ प्रेम में कभी नहीं होता है वियोग।"[11]

इस संग्रह की कविताओं में कवि की प्रयोगधर्मिता भी है। मुक्तछंद के साथ इसमें पाँच सॉनेट भी संकलित है। त्रिलोचन, रेवतीजी के प्रिय आधुनिक कवि हैं। उनके सॉनेट पर वे लिखते विचार करते रहे हैं। इस संग्रह के सॉनेट कवि की कल्पनाशीलता के साथ शिल्पगत वैशिष्ट्य का भी साथ देते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रेवतीजी अपने समय के एक अत्यंत जागरूक और संवेदनशील कवि रहे हैं। कविता वस्तुतः उनकी साहित्यिक यात्रा का प्रवेश द्वार रही है। रेवतीजी ने निरंतर कविताएँ लिखी है। उनकी अनेक कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी हुई है और बहुत सारी अप्रकाशित है। एक आलोचक के रूप में भले ही वो प्रख्यात रहे हों लेकिन उनका कवि कर्म भी अत्यंत सार्थक और प्रेरक रहा है।

संदर्भ-सूची :

1. समय की रंगत, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण : 2001 ई0; ब्लर्व से.
2. 'अभी तो' शीर्षक कविता से, समय की रंगत, पृष्ठ-9.
3. वही, पृष्ठ-9-10.
4. 21वीं शताब्दी, वही, पृष्ठ-12.
5. 'कागज' शीर्षक से, वही, पृष्ठ-19.
6. वही, पृष्ठ-21.
7. 'कलम' शीर्षक कविता से, वही, पृष्ठ-23.
8. 'किताब' शीर्षक कविता से, वही, पृष्ठ-'24.
9. 'विज्ञापन' शीर्षक कविता से, वही, पृष्ठ-27.
10. 'कस्बे का कवि' शीर्षक कविता से, वही, पृष्ठ-35.
11. 'सिंहलद्वीप' शीर्षक कविता से, वही, पृष्ठ-39.

•